IJAER/October-November 2013/Volume-2/Issue-6/Article No-12/ 712-716 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

लाल बहादुर शास्त्री जी की भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में भूमिका का संक्षिप्त विश्लेषण

Dr. Anup Pradhan
Department of Poltical Science
SunRise University,Alwar
Rajasthan

सार:
लाल बहादुर शास्त्री भारत के उन महान नेताओं की श्रेणी में आते हैं, जिन्होंने देश के राष्ट्रीय इतिहास में महत्वपूर्ण और नाजुक मोड़ पर भाग लेकर भारत को एक नई दिशा और सोच प्रदान की। एक ओर तो उन्होंने भारत के स्वाधीनता संग्राम में आपात मस्तक डूबकर महात्मा गांधी और जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में भारत के स्वातंत्र्य संग्राम में अनवरत सहभागिता की। दूसरी ओर भारत को अन्न उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाकर उसे स्वाभिमानी राष्ट्र के रूप में सुस्थापित किया। भारतीयता तथा गांधी जी के आदर्शों के प्रबल समर्थक शास्त्री जी की प्रबल धारणा थी कि केवल भारतीय आदर्श एवं परम्पराएं ही राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधने की क्षमता रखती हैं। उन्होंने अपने तक्रसंगत ओजस्वी भाषणों के माध्यम से देश को "जय जवान जय किसान" का नारा देकर भारतीय जनता को संदेश दिया कि भारत की प्रगति एवं सुरक्षा के लिये खेत–खलिहानों में मेहनत करने वाला किसान और देश की सीमाओं की रक्षा करने वाला सिपाही अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

प्रस्तावना:
राष्ट्रीयता की भावना विद्यार्थी जीवन में ही लाल बहादुर शास्त्री के हृदय में घर करने लगी थी। उनके अंग्रेजी के प्राध्यापक निष्कामेश्वर जी वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अपने प्रखर राष्ट्रीय विचारों की अमिट छाप किशोर लाल बहादुर के मस्तिष्क पर छोड़ी थी। अपनी बात को बेबाक, निर्भय और पूर्ण आत्मविश्वास से कहने की प्रेरणा उनको गांधी जी के उस भाषण से मिली थी जो काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के उद्घाटन समारोह में दिया गया था। 4 फरवरी 1916 को वायसराय लार्ड हार्डिंज ने इस विश्वविद्यालय का उद्घाटन किया था। इस अवसर पर भारत के कितने ही गणमान्य लोग और राजा महाराजा एकत्रित हुए थे। मालवीय जी ने भारतीय संस्कृति एवं आदर्शों की रक्षा एवं उत्कर्ष के लिए ही विश्वविद्यालय की स्थापना काशी में की थी। मालवीय जी यद्यपि राजनीतिक विषयों में गांधी जी से भिन्न विचार रखते थे। किन्तु उनकी सरलता, सेवावृत्ति, आडम्बरहीन वेशभूषा तथा भारतीय संस्कृति में उनकी गहरी निष्ठा से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने इस अवसर पर छात्रों को सम्बोधित करने के लिए गांधी जी से आग्रह किया था। इस अवसर पर गांधी जी ने जो भाषण किया वह ऐसे अवसरों पर किये जाने वाले परम्परावादी भाषणों से बिल्कुल भिन्न था। एक ओर उसमें भारत के पतन एवं विवश–स्थिति का उल्लेख था, दूसरी ओर एक गहरी नैतिक प्रेरणा तथा भारतीय भाषा, वेशभूषा, संस्कार और देश की दीनता को देखते हुए कुछ कर गुजरने का प्रबल आग्रह था। सार्वजनिक मंच से, जहां ब्रिटिश सत्ता की छत्र–छाया में पले राजा, महाराजाओं, बड़े–बड़े जमीदारों और नवाबों का जमघट हो, गांधी जी का भाषण एक चुनौती लिये आया था। यह उनका वह भाषण है जिसने युवक लाल बहादुर के आगामी जीवन की पृष्ठभूमि तैयार की। लालबहादुर यद्यपि इस समारोह में स्वयं उपस्थित नहीं थे लेकिन उसके विषय में उन्होंने समाचार–पत्रों में पढ़ा था।

लाल बहादुर ने गांधी जी के भाषण को किस प्रकार अपने जीवन में व्यवहारिक रूप देकर आत्मसात् किया इसको समझने के लिये गांधी जी के उस भाषण का अवलोकन वांछित होगा। गांधी जी ने बेबाकी के साथ उद्घाटन समारोह में उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा था, "जिनके सामने मैं बोल रहा हूँ वे विद्यार्थीगण तो एक क्षण के लिए इस बात को मन में जगह दें कि जिस आध्यात्मिकता के लिए इस देश की ख्याति है और जिसमें उसका कोई सानी नहीं है, उसका संदेश बद्यार कर दिया जा सकता है।.....मुझे आशा है कि किसी न किसी दिन भारत संसार को यह संदेश देगा, किन्तु केवल वचनों के द्वारा यह संदेश कभी नहीं दिया जा सकेगा। मैं यह कहने की घृष्टता कर रहा हूँ कि हम भाषण देने की कला के लगभग शिखर पर पहुंच चुके हैं और अब आयोजनों को देख लेना और भाषणों को सुन लेना ही पर्याप्त नहीं माना जाना चाहिए, अब हमारे मनों में स्मरण होना चाहिए

और हाथ–पांव हिलने चाहिए।"

राष्ट्रभाषा हिन्दी की जोरदार वकालत करते हुए उन्होंने कहा– "मैं कहना चाहता हूँ कि मुझे आज इस पवित्र नगर में, इस महान विद्यापीठ के प्रांगण में, अपने ही देशवासियों से एक विदेशी भाषा में बोलना पड़ रहा है। यह बड़ी अप्रतिष्ठा और शर्म की बात है। मुझे आशा है कि इस विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देने का प्रबन्ध किया जायेगा......यदि आप मुझसे यह कहें कि हमारी भाषाओं में उत्तम विचार अभिव्यक्त किये ही नहीं जा सकते तब तो हमारा संसार से उठ जाना अच्छा है। क्या कोई व्यक्ति स्वप्न में भी यह सोच सकता है कि अंग्रेजी भविष्य में किसी भी दिन भारत की राष्ट्र भाषा हो सकती है? स्वराज्य के लिये गांधी जी ने कहा की धुआंधार भाषण हमें स्वराज्य के योग्य नहीं बना सकते।" उन्होंने बिल्कुल साफ शब्दों में कहा कि, "यदि किसी दिन हमें स्वराज्य मिलेगा तो वह अपने ही पुरूषार्थ से मिलेगा। वह दान के रूप में कदापि नहीं मिलने का ब्रिटिश साम्राज्य के इतिहास पर दृष्टिपात कीजिए। ब्रिटिश साम्राज्य चाहे स्वतन्त्रता प्रेमी हो, फिर भी स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए स्वयं उद्योग न करने वालों को वह कभी स्वतंत्रता देने वाला नहीं है" इस समारोह में राजा महाराजाओं के वस्त्राभूषणों, जो केवल स्त्रियों को ही शोभा दे सकते थे, देखकर गांधी जी को बड़ा दुःख हुआ। जिसे प्रकट करते हुए उन्होंने कहा, "मैंने हर अंधेरे कोने में मशाल जलाकर देखा है, और चूंकि आपने मुझे बातचीत की यह सुविधा दी है, मैं अपना मन आपके सामने खोल रहा हूँ।.......जिन महाराजा महोदय ने कल की हमारी बैठक की अध्यक्षता की थी, उन्होंने भारत की गरीबी की चर्चा की।......किन्तु जिस शामियाने में वासयराय द्वारा शिलान्यास समारोह हो रहा था, वहां हमने क्या देखा?

एक ऐसा शानदान प्रदर्शन, जड़ाऊ गहनों की ऐसी प्रदर्शनी, जिसे देखकर पेरिस से आने वाले किसी जौहरी की आंखें भी चौंधिया जाती। जब मैं गहनों से लदे हुए उन अमीर उमरावों को भारत के लाखों गरीब आदमियों से मिलाता हूँ, तो मुझे लगता हे कि मैं इन अमीरों से कहूँ, जब तक आप अपने ये जेवरात नहीं उतार देते और उन्हें गरीबों की धरोहर मानकर नहीं चलते तब तक भारत का कल्याण नहीं होता।"

यहां यह जानना आवश्यक है कि श्रीमती ऐनी बेसेन्ट प्रारम्भ से ही गांधी जी की स्पष्ट और बेबाक बातों को पसन्द नहीं कर रही थी। गांधी जी के भाषण के बीच एक बार तो उन्होंने गांधी जी से भाषण शीध्र समाप्त करने के लिए कहा और थोड़ी देर के पश्चात् वह बीच से उठकर चल दीं और उनके साथ कई बड़े–बड़े लोग उठकर चले गये। गांधी जी के इस क्रांतिकारी भाषण की सरकार पर प्रतिक्रिया यह हुई कि पुलिस कप्तान ने बनारस से गांधी जी के तुरन्त बाहर चले जाने का आदेश निकाला जिसे मालवीय जी के हस्तक्षेप से वापस ले लिया गया।
लाल बहादुर शास्त्री बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के समारोह के प्रत्यक्षदर्शी नहीं थे लेकिन महात्मा गांधी के वहां पर दिये गये भाषण के विषय में उन्होंने अपने बुजुर्गों से सुना था। इस भाषण की गहरी छाप किशोर लाल बहादुर के जीवन पर पड़ी थी।

अहसयोग आन्दोलन में लालबहादुर ने एक किशोर विद्यार्थी के रूप में भाग लिया और फिर जीवन पर्यन्त गांधी जी द्वारा दिखलायें गए मार्ग पर चलते रहे। गांधी जी द्वारा घोषित रचनात्मक कार्यक्रम को उन्होंने अपने जीवन में साकार रूप से उतारने का प्रयत्न किया। अपने विद्यार्थी जीवन और फिर राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेते समय किसी न किसी रूप में वह रचनात्मक कार्यक्रम के क्रियान्वयन में संलग्न रहे।

रचनात्मक कार्यक्रम एवं असहयोग आन्दोलन की पृष्ठभूमि:
जलियांवाला बाग के नरसंहार और फिर हंटर कमेटी के रूख से भारत की जनता को बड़ा धक्का लगा था। अखिल भारतीय कांग्रेस महासमिति की बनारस में हुई बैठक में यह निश्चय हुआ कि हंटर कमेटी और खिलाफत के प्रश्न पर विचार करने के लिए कांग्रेस का एक विशेष अधिवेशन बुलाया जाए। खिलाफत सम्मेलन, इलाहाबाद, मद्रास और कई दूसरे नगरों में हुए। इन सम्मेलनों में असहयोग आन्दोलन के निर्णय दुहराए गए। अगस्त 1920 में असहयोग आन्दोलन की योजना की घोषणा की गई और इसके बाद गांधी जी और अली बन्धुओं ने इसे समझने के लिए देश का दौरा शुरू किया।

कांग्रेस का विशेष अधिवेशन 4 सितम्बर से 9 सितम्बर, 1920 तक कलकत्ते में हुआ। इस अधिवेशन की अध्यक्षता लाला लाजपतराय ने की। इस अधिवेशन में उपस्थित अधिकांश प्रतिनिधि कई चरणों में असहयोग आन्दोलन का

कार्यक्रम स्वीकार करने के पक्ष में थे। कलकत्ता कांग्रेस में लोगों ने देखा कि गांधी जी, जो पहले ब्रिटिश सरकार के साथ पारस्परिक सहयोग के पक्ष में थे अब सहयोगी से असहयोगी बनकर उन लोगों के नेता बने जो यह चाहते थे कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए कांग्रेस सीधा आन्दोलन छेड़े। गांधी जी ने यहां मुख्य प्रस्ताव पेश किया जिसमें देश की जनता का आह्वान् किया गया था कि वह अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलन की नीति स्वीकार करें और इसे जब तक स्वराज्य प्राप्त न हो जाए तब तक चलाती रहे। कलकत्ता अधिवेशन में कुछ ऐसे महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए, जिन्होंने यदि एक ओर कांग्रेस के स्वरूप को बदला तो दूसरी ओर भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन को एक योजनाबद्ध गति और नई दिशा प्रदान की गांधी जी ने पहली बार पूर्ण आत्मविश्वास के साथ घोषणा की, कि उनके पास एक ऐसा कार्यक्रम है कि यदि भारत की जनता पूरी निष्ठा के साथ उसका पालन करें तो वह भारत को एक साल में स्वराज दिलाने का वादा करते हैं। इसके लिये उन्होंने एक ओर कांग्रेस में कुछ मूलभूत परिवर्तन करने की सलाह दी और दूसरी ओर भारतीय जनता के सम्मुख अपना एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसका देश की जनता को अक्षरशः पालन करना था। गांधी जी ने अपना यह कार्यक्रम एक प्रस्ताव के रूप में कांग्रेस के कलकत्ता के विशेष अधिवेशन में पेश किया। इस प्रस्ताव में सरकारी उपाधियों और अवैतनिक पदों के त्याग, सरकारी स्कूलों का बहिष्कार तथा वकीलों द्वारा अदालतों के बहिष्कार का अनुरोध किया गया। इसके साथ ही प्रत्येक देशवासी से अनुरोध किया गया था कि वह स्वदेशी वस्तुओं का ही उपभोग करें और इसको मूर्तरूप देने के लिए प्रत्येक घर में चर्खे द्वारा सूत कातने और खादी बुनने का कार्य आरम्भ हो। गांधी जी ने रचनात्मक कार्यक्रम को विस्तार से स्पष्ट किया कि असहयोग आन्दोलन कौंसिलों, अदालतों और शिक्षा संस्थानों के बहिष्कार से प्रारम्भ होगा लेकिन उसका विकास होगा देश के असैनिक और सैनिक प्रशासन से असहयोग में और उसकी परिणति होगी कर देने से इंकार करने में। उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि उनके स्वराज्य का अर्थ केवल राजनीतिक स्वतन्त्रता नहीं है। बिना आर्थिक स्वतन्त्रता और सामाजिक न्याय के ऐसी आजादी बिल्कुल निरर्थक होगी। गांधी जी का यह भी कहना था कि असहयोग कार्यक्रम के साथ–साथ रचनात्मक कार्यक्रम भी चलता रहना चाहिये, जिसमें अन्य बातों के अलावा सांप्रदायिक एकता, अछूतोद्धार, खादी, स्वदेशी, ग्रामोद्योग, ग्रामीण विकास, राष्ट्रीय शिक्षा, मद्य–निषेध और ग्राम पंचायतों का संगठन शामिल होना चाहिए।

कलकत्ता के विशेष अधिवेशन के तीन महीने बाद कांग्रेस का नियमित वार्षिक अधिवेशन दिसम्बर 1920 में नागपुर में हुआ। कलकत्ते के अधिवेशन में गांधी जी द्वारा पेश किए गए असहयोग और रचनात्मक कार्य के प्रस्ताव पर यहां फिर विचार हुआ। इस कार्यक्रम को स्वीकार करने का प्रस्ताव देशबन्धु चितरंजन दास ने और अनुमोदन लाला लाजपत राय ने किया। नागपुर में असहयोग का यह प्रस्ताव भारी बहुमत से स्वीकार कर लिया गया। इस अधिवेशन से गांधी जी का कांग्रेस और देश के एकमात्र नेता के रूप में उदय हुआ।

गांधी जी ने कांगेस को अपने पुराने तौर तरीके बदलने की भी सलाह दी। कांगेस के अधिवेशन बहुधा कुछ बड़े–बड़े शहरों में होते थे, जिनमें कुछ महत्वपूर्ण प्रतिष्ठित गणमान्य लोग अंग्रेजी भाषा में वार्तालाप किया करते थे। गांधी जी ने कांग्रेस को सलाह दी कि भविष्य में कांग्रेस के अधिवेशनों में भारतीय भाषाओं का प्रयोग किया जाएं साथ ही प्रत्येक कांग्रेसी के लिए स्वदेशी वस्त्र पहनना और स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग भी आवश्यक कर दिया गया। कांग्रेस में चार आने की सदस्यता खोली जाएगी, जिसमें कोई भी इच्छुक व्यक्ति आसानी से कांग्रेस का सदस्य बन सके। यह भी निर्णय किया गया कि भविष्य में कांग्रेस के अधिवेशन बड़े शहरों के स्थान पर छोटे शहरों तथा ग्रामीण क्षेत्रों में किये जायेंगे, जिससे देश की गरीब, अशिक्षित, राजनीति से अनभिज्ञ, सामाजिक रूप से पिछड़ी हुई जनता तथा देश के किसानों का सहयोग राष्ट्रीय आन्दोलन में भरपूर मिल सके। गांधी जी की अपील के प्रति उत्तर में देश की जनता में असाधारण उत्साह देखा गया। हजारों अध्यापकों और विद्यार्थियों ने सरकारी स्कूल और कॉलिज छोड़ दिए। नये राष्ट्रीय स्कूल, कॉलिज और विद्यापीठ देश भर में खोले गए। बहुत से वकीलों ने वकालत छोड़ दी और असहयोग की सफलता के लिए काम करने लगे।

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन इस समय गांधी जी के अहिंसात्मक सत्याग्रह एवं क्रांतिकारियों की गतिविधियों के दौर से गुजर रहा था। गांधी जी के नेतृत्व में देश को कांग्रेस के रूप में एक सुसंगठित राजनीतिक दल का दर्शन हुआ। नवयुवक लालबहादुर के हृदय पर भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के बदलते हुए इस स्वरूप का गहरा प्रभाव पड़ा और उन्होंने महसूस किया कि इसका श्रेय केवल एक व्यक्ति को दिया जा सकता था और वे व्यक्ति थे महात्मा गांधी। यही कारण था कि गांधी जी के आह्वावान पर अपनी माँ से आज्ञा लेकर वह असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े। लाल बहादुर के साथ उनके स्कूल के पांच अन्य सहपाठी त्रिभुवन नारायण, अलगू राय, हरिहर नाथ, बालकृष्ण केसकर तथा ज्ञान स्वरूप भी थे। लालबहादुर धरना देते हुए गिरफ्तार किये गए लेकिन युवा होने के

कारण उन्हें जेल नहीं भेजा गया।

चौरीचौरा की घटना ने असहयोग आन्दोलन को एक नया मोड़ दिया, वह घटना गांधी जी के लिए एक गम्भीर हादसा थी। उन्होंने इस हत्याकाण्ड का समाचार पाते ही असहयोग आन्दोलन के कार्यक्रम को स्थगित कर देने का निश्चय किया। पं० मदन मोहन मालवीय ने गांधी जी से कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक बुलाने का अनुरोध किया। 12 फरवरी 1922 को बारडोली में कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक में राष्ट्रीय नेताओं के विरोध, कुढ़न और हतोत्साह के बावजूद प्रस्तावित असहयोग आन्दोलन के स्थगन का प्रस्ताव पारित किया गया। सार्वजनिक आन्दोलन को स्थगित कर देने के निर्णय से कांग्रेस के अधिकांश बड़े नेता गांधी जी से नाराज थे। इन नेताओं में जिनका प्रतिनिधित्व देशबन्धु चितरंजन दास और मोतीलाल नेहरू करते थे, बारडोली के फैसले के बाद राष्ट्रीय आन्दोलन को एक नया मोड़ देने का प्रयास किया। उनके विचार में गांधी जी के अहिंसात्मक असहयोग की नीति अनुपयोगी एवं अव्यवहारिक थी। उन्होंने कांग्रेस के अन्दर रहते हुए चुनाव लड़ने के लिए ओर धारा सभाओं में वैधानिक मोर्चे पर संघर्ष चलाने के लिए स्वराज्य पार्टी का गठन किया।

असहयोग आन्दोलन के स्थगन के पश्चात् लाल बहादुर ने पुनः अपनी पढ़ाई आरम्भ करने के लिए शिव प्रसाद गुप्त द्वारा स्थापित तथा गांधी जी द्वारा उद्घाटित काशी विद्यापीठ में प्रवेश लिया। यह विद्यापीठ वस्तुतः लाल बहादुर की नर्सरी थी जहां उन्हें लब्ध प्रतिष्ठित विद्वानों के सम्पक्र में आने और उनसे सीखने का अवसर मिला। विद्यापीठ में उन्होंने डॉ० भगवान दास, श्री प्रकाश, आचार्य कृपलानी, आचार्य नरेन्द्र देव तथा डॉ० सम्पूर्णानन्द जैसे विद्वानों से शिक्षा प्राप्त की। यहां उन पर सबसे अधिक प्रभाव डॉ० भगवानदास और आचार्य नरेन्द्र देव का पड़ा। आचार्य नरेन्द्र देव के सम्पक्र में आने वाला कोई भी व्यक्ति उनकी विनम्रता से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था और सम्भवतः विनम्रता का उपहार लाल बहादुर शास्त्री को उन्हीं से मिला था।

शास्त्री जी के आरम्भिक जीवन के चरित्र का निर्माण पांच अवस्थाओं में हुआ। सबसे पहलेहरिश्चन्द्र हाईस्कूल, बनारस के अध्यापक मिश्र जी ने उनमें राष्ट्रीयता की भावना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दूसरे थे महात्मा गांधी जो हमेशा उनके आदर्श रहे। तीसरे काशी विद्यापीठ ने उनकी प्रतिभा को और परिष्कृत किया यहां न केवल उन्होंने 'शास्त्री' की उपाधि अर्जित की। यहां उन्होंने सुलह कला में महारत हासिल की। परिणाम स्वरूप उन्हें श्रेष्ठ सुलहकुल कहा जाने लगा। चौथा था लोक सेवक मण्डल। यहां उन्हें आजीवन सदस्य की पदवी मिली। मण्डल की आजीवन सदस्यता के कारण ही उन्हें देश सेवा का सुअवसर प्राप्त हुआ। अन्त में पंडित गोविन्द बल्लभ पंत ने शास्त्री जी को प्रभावित किया। उस समय के संयुक्त प्रांत (उत्तर प्रदेश) के मुख्यमंत्री थे। 1930 से 1935 तक प्रयाग जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष तथा मंत्री रहे। 1937 में प्रान्तीय विधान मण्डल चुनाव होने पर श्री लाल बहादुर शास्त्री इलाहाबाद से विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुये। उनके साथ श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित भी चुनाव जीती। सन् 1941 में शास्त्री जी फिर बंदी बना लिये गये। क्योंकि इस शान्त क्रान्तिकारी को सबसे अधिक खतरनाक समझती थी। जेल से छूटने के बाद सन् 1942 के महान आन्दोलन में शास्त्री जी ने डटकर हिस्सा लिया। परिणाम स्वरूप वे फिर बंदी बना लिये गये। तीन वर्ष जेल जीवन व्यतीत करने के उपरान्त शास्त्री जी जेल से छूटे। आते ही उन्होंने बिखरे कार्य को फिर से एक सूत्र में पिरोया। सन् 1935 से सन् 1945 ई० तक शास्त्री जी का जेल–जीवन कठिन संघर्षों और परीक्षा का काल रहा।

पं० जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में पहली बार निर्वाचित मंत्री मण्डल बना। 13 मई 1952 को इन्हें रेल एवं परिवहन मंत्री का पदभार सौंपा गया और शास्त्री जी ने जनता जर्नादन की जो सेवा की है, उसका एक अपना ही इतिहास है। जनता गाड़ी देश को शास्त्री जी की देन है। पं० नेहरू लाल बहादुर शास्त्री की उपयोगिता नैतिकता, आदर्शवादिता उनकी निष्ठा परिश्रम तथा उनकी योग्यता को भली भांति समझते थे। अपनी अस्वस्थता के काल में नेहरू जी ने लाल बहादुर शास्त्री को बिना विभाग का मंत्री नियुक्त किया। 27 मई 1964 को पंडित नेहरू की मृत्यु के बाद 2 जून 1964 को लाल बहादुर शास्त्री को कांग्रेस संसदीय दल का नेता चुन लिया गया तथा 9 जून 1964 को इन्होंने भारत के दूसरे प्रधान मंत्री के रूप में पद भार ग्रहण किया।

निष्कर्ष:
लोकतंत्रीय आदर्शों, राष्ट्रीय समस्याओं एवं मर्यादाओं के विषय में शास्त्री जी की दृष्टि बिल्कुल स्पष्ट थी। वह भारतीय पहले थे पीछे कुछ और। विरोधी विचारधाराओं का उनकी दृष्टि में सम्मानित स्थान था। वह न तुष्टिकरण

की नीति में विश्वास रखते थे और न उनके मन में किसी के लिये दुर्भावना थी। उनके पूर्ववर्ती प्रधान मंत्री, नेहरू यदि भारतीय भव्यता एवं अभिजात्य संस्कृति के प्रतीक थे तो शास्त्री जी भारतीय सादगी के आदर्श थे। यह निर्णय आगे चलकर इतिहास ही करेगा कि लाल बहादुर शास्त्री क्या थे लेकिन यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि इतिहास का निर्णय उन्हें बहुत ऊँचा उठा देगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. बी० पट्टामिसीतारामय्या : कांग्रेस का इतिहास : 1885 से 1935 तक पृ० 187, सस्ता साहित्य मण्डल—1935
2. रोबर्ट पेन : दि लाइफ एण्ड डैथ आफ महात्मा गांधी, पृ० 299, कोनेकी एण्ड कोनेकी : न्यूयाक्र : 1969
3. अय्यर, एस॰पी॰: परस्पेक्टिव ऑन दा वेलफेयर स्टेट, मानकटालस, बम्बई, 1966 ।
4. आजाद, एन॰ ए॰ के॰ : आजादी की कहानी, ताज प्रिटिंग प्रेस, नई दिल्ली 2012
5. बार्कर, सर अर्नेस्टट आक्सफोर्ड : प्रिंसीपल ऑफ सोशियल एण्ड पोलिटिकल थ्योरी।
6. सी0पी0 श्रीवास्तव, लाल बहादुर शास्त्री, राजनीति में सत्यनिष्ठ जीवन, पृ0 53, मोतीलाल बनारसीदास, पब्लिशर्स, प्राइवेट लिमिटेड, 2000।
7. सी०के० जैन लाल बहादुर शास्त्री और संसद : लोक सभा सचिववालय, नई दिल्ली, 2014—पृ० 4
8. डी0आर0 मनकेकर आधुनिक भारत के निर्माता लाल बहादुर शास्त्री, पृ0 55, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, 2005
9. डा0 लाल बहादुर सिंह चौहान, महान सपूत लाल बहादुर शास्त्री, पृ0 77, आत्माराम एण्ड संस, 2000
10. उत्तर प्रदेश में गांधी जी, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ, 1987 पृ० 42.
11. जे० बी० कृपलानी : महात्मा गांधी — जीवन और चिन्तन : प्रकाशन विभाग : भारत सरकार : 1978 : पृ०, 92